# ३. उपयोजित इतिहास

३.१ उपयोजित इतिहास किसे कहते हैं ?
३.२ उपयोजित इतिहास और विविध विषयों में हुए अनुसंधान ।
३.३ उपयोजित इतिहास और वर्तमानकाल ।
३.४ सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का प्रबंधन
३.५ संबंधित व्यवसाय के क्षेत्र

## ३.१ उपयोजित इतिहास किसे कहते हैं ?

'उपयोजित इतिहास' संज्ञा के लिए 'लोगों/सामान्य जनों का इतिहास' (पब्लिक हिस्ट्री) यह वैकल्पिक शब्द प्रयोग प्रचलित है । भूतकाल में घटित घटनाओं के संबंध में जो ज्ञान इतिहास द्वारा प्राप्त होता है; उसका उपयोग वर्तमान और भविष्य में सभी लोगों के लिए किस प्रकार हो सकता है; इसका विचार उपयोजित इतिहास विषय द्‌वारा किया जाता है । वर्तमान में उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों को दूर करने के लिए उपाय योजना करना, सामाजिक हितों के निर्णय करना जैसी बातों के लिए पहले घटित घटनाओं का विश्लेषण दिशा दिखाने का कार्य करता है । इसके लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक होता है ।

**समझ लें**

**सामान्य जनों के लिए इतिहास :** लोगों के मन में इतिहास के विषय में अनेक भ्रम अथवा भ्रांतियाँ होती हैं । जैसे – इतिहास विषय केवल इतिहासकारों और इतिहास विषय का अध्ययन करने को इच्छुक छात्रों के लिए होता है । प्रतिदिन के जीवन में इतिहास जैसे विषय का कोई उपयोग नहीं होता है, इतिहास जैसा विषय आर्थिक दृष्टि से उत्पादन क्षेत्रों के साथ जोड़ा नहीं जा सकता आदि ।

ऐसी भ्रांतियों अथवा भ्रमों का निवारण करते हुए इतिहास का सूत्र लोगों की वर्तमान जीवनप्रणाली से जोड़नेवाला क्षेत्र ही 'सामान्य जनों का इतिहास' है । विदेश में अनेक विश्वविद्‌यालयों में 'सामान्य जनों का इतिहास' इस विषय का पाठ्‌यक्रम पढ़ाया जाता है । भारत में बंगलुरु में 'सृष्टि इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्ट डिजाईन एंड टेक्नोलॉजी' संस्थान में 'सेंटर फॉर पब्लिक हिस्ट्री' एक स्वतंत्र विभाग है । वहाँ इस विषय से संबंधित परियोजनाओं और अनुसंधान का कार्य चलता है ।

उपयोजित इतिहास के क्षेत्र में केवल तज्ञ व्यक्तियों का ही नहीं वरन् सामान्य लोगों का विविध रूपों में सहभाग हो सकता है । संग्रहालय, प्राचीन स्थानों की सैर पर आनेवाले पर्यटकों के रूप में लोगों का सहभाग महत्त्वपूर्ण होता है । पर्यटन के कारण लोगों में इतिहास के प्रति रुचि बढ़ने लगती है । समाज के मन में इतिहास का बोध निर्माण होता है । साथ ही; लोग अपने नगरों अथवा गाँवों में स्थित प्राचीन स्थानों के संरक्षण एवं संवर्धन की परियोजना में सहभागी हो सकते हैं ।

## ३.२ उपयोजित इतिहास और विविध विषयों में हुए अनुसंधान

इतिहास का संबंध भूतकाल में घटित घटनाओं के साथ होता है । वर्तमान में दिखाई देने वाले मानव जीवन का ताना-बाना घटित घटनाओं के कारण बुना जाता है । ये घटनाएँ राजनीति, सामाजिक-धार्मिक संगठन, दर्शन, तकनीकी विज्ञान और विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों में घटित हुई होती हैं । प्रत्येक ज्ञान संचय का अपना स्वतंत्र इतिहास होता है । प्रत्येक क्षेत्र की अगली यात्रा की दिशा इस ज्ञान संचय की स्थिति पर निर्भर रहती है । उसी के अनुसार अनेक विषयों के अनुसंधान में इतिहास की अनुसंधान पद्‌धति उपयुक्त सिद्‌ध होती है । जैसे –

**१. दर्शन :** विविध विचारधाराओं का उद्‌गम, उसका कारण बनी वैचारिक परंपरा और उस

विचारधारा की प्रगति यात्रा के इतिहास को समझना; इसके लिए इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक होता है । दर्शन को समझते समय वह दर्शन जिस भाषा में व्यक्त हुआ है; उस भाषा के इतिहास का भी उपयोग होता है ।

**२. विज्ञान :** वैज्ञानिक आविष्कारों और सिद्‌धांतों का कालक्रम और उन आविष्कारों की कारण परंपरा की शृँखला को समझने के लिए विज्ञान के इतिहास का अध्ययन करना पड़ता है । कहा जाता है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है । कई बार वैज्ञानिक आविष्कार मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने और जिज्ञासा का शमन करने के प्रयासों का परिणाम होते हैं । इसके लिए पूर्ववर्ती वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग किया जाता है । इन आविष्कारों के पीछे जो कारण, परंपरा और कालक्रम होता है; उसे समझने के लिए विज्ञान के इतिहास का ज्ञान उपयोगी सिद्‌ध होता है ।

**३. तकनीकी विज्ञान :** कृषि उत्पादन, वस्तुओं का उत्पादन, स्थापत्य, अभियांत्रिकी आदि में होते गए परिवर्तन और उनके पीछे जो कारण परंपरा की शृँखला होती है; उसे समझने के लिए तकनीकी विज्ञान के इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक होता है । वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी विज्ञान में होने वाली प्रगति एक-दूसरे पर निर्भर होती है । मानव की उत्क्रांति यात्रा में पत्थर के शस्त्र-औजार निर्माण करने से लेकर कृषि उत्पादन का विकास होने तक उसके द्‌वारा ग्रहण किया हुआ विज्ञान और उसपर आधारित तकनीकी विज्ञान बहुत महत्वपूर्ण था । कालांतर में विज्ञान में हुई उन्नति के फलस्वरूप उत्पादन प्रक्रियाओं का यांत्रिकीकरण होता गया । यह यांत्रिकीकरण किस प्रकार होता गया, विज्ञान और तकनीकी विज्ञान किस प्रकार सदैव एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं; इसे समझने के लिए तकनीकी विज्ञान के इतिहास का आकलन करना आवश्यक होता है ।

**४. उद्‌योग-धंधे और व्यापार :** उद्‌योग-धंधों और व्यापार के कारण मानवी समाजों के बीच पारस्परिक व्यवहार का क्षेत्र फैल जाता है । फलस्वरूप सांस्कृतिक संबंधों का जाल भी निरंतर विकसित होता जाता है । यह उद्‌योग-धंधों और व्यापार के प्रबंधन का ही एक अंग होता है । उनके इतिहास को समझना महत्त्वपूर्ण होता है । बाजार और व्यापार का स्वरूप बदलता गया । इन सभी के पीछे-पीछे मानवी रिश्तों-नातों का स्वरूप और सामाजिक ढाँचा बदलता गया । इस संपूर्ण यात्रा को समझने के लिए सांस्कृतिक संरचना, सामाजिक ढाँचा, आर्थिक व्यवस्था आदि के इतिहास का अध्ययन करना पड़ता है ।

**५. प्रबंधन विज्ञान :** उत्पादन के संसाधन, मानवशक्ति और उत्पादन की विविध प्रक्रियाओं, बाजार और विक्रय के प्रबंधन की शृँखला में इनके संबंध में भूतकालीन व्यवस्थाएँ किस प्रकार थीं; इसे समझना आवश्यक होता है । इस शृँखला से जुड़े विविध स्तरों के लोगों की पारंपरिक मानसिकता को समझने के लिए इन सभी का भार जिन अलग-अलग सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं के संगठनों पर निर्भर रहता है; यदि उनका इतिहास समझते हैं तो वर्तमान समय में विविध स्तरों पर प्रबंधन करना सरल हो जाता है ।

**६. कला :** विविध कला क्षेत्रों में हुई अभिव्यक्ति और उसके कारण वैचारिक-भावात्मक-सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर हुए कलाओं के विकास को समझना आवश्यक है । किसी भी कला की अभिव्यक्ति के मर्म को कलाकृति बनाने वाले की मानसिकता और विशिष्ट कला शैली के विकास क्रम को सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन द्‌वारा समझा जा सकता है ।

**७. मानव्य ज्ञानशाखा :** इतिहास, पुरातत्त्व, समाज विज्ञान, मानव विज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र जैसी ज्ञानशाखाओं के उद्‌गम और विकास को समझ लेना इन ज्ञान शाखाओं के अध्ययन का आवश्यक अंग है । विज्ञान और अन्य सभी ज्ञान

शाखाओं की जननी दर्शन है । वैश्विक पसारा और उसमें मानव का अस्तित्व; इनके पारस्परिक संबंध को समझ लेने की जिज्ञासा में से विश्वभर के सभी मानवी समाजों में उस पारस्परिक संबंध के बारे में लोग अनुमान करने लगे । उसमें से विश्व की उत्पत्ति से संबंधित कथाएँ, सृष्टिचक्र आरै मानवी जीवन से संबंधित मिथक, देवी-देवताओं के संबंध में कल्पनाएँ और उन देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किए गए अनुष्ठान, उनके संबंध में किए गए तात्त्विक विवेचन का विकास हुआ । प्राचीन लोगों द्वारा किए गए इन अनुष्ठानों के विचारों में दर्शन और तत्वों के बीज हैं । यहाँ उल्लिखित मानव्य शाखा की विभिन्न शाखाओं का विकास दर्शन के सिद्धांतों की नींव पर आधारित है ।

## ३.३ उपयोजित इतिहास और वर्तमानकाल

प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि प्रतिदिन के व्यवहार में इतिहास की क्या उपयोगिता है? उपयोजित इतिहास किसे कहते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में ऊपरी प्रश्न का उत्तर अपने-आप मिल जाता है । भूतकाल के मूर्त और अमूर्त स्वरूप में जो अनेक अवशेष हैं; वे वर्तमानकाल में पाए जाते हैं । हमारे मन में उनके बारे में कुतूहल रहता है, अपनापन होता है । हमें उनके अस्तित्व का इतिहास समझ लेने की आवश्यकता अनुभव होती है । क्योंकि वे अवशेष हमारे पूर्वजों द्वारा निर्मित कलाकृतियों, परंपराओं के अवशेष होते हैं । वह हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है । वे हमारी पहचान होते हैं । उसके इतिहास का ज्ञान हमें हमारे उद्‌गम स्रोत तक ले जाता है । अतः उस विरासत को हमारी और हमारी आनेवाली पीढ़ियों के हितों को दीर्घकाल तक संरक्षित रखने की, उनका संवर्धन करने की आवश्यकता उत्पन्न होती है । उपयोजित इतिहास द्वारा मूर्त और अमूर्त स्वरूप की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सकता है । फलस्वरूप व्यवसाय के अनेक अवसर निर्माण होते हैं । संक्षेप में कहना हो तो इतिहास के आधार पर वर्तमानकाल का यथायोग्य आकलन और भविष्यकाल के लिए दिशानिर्देशन; इस रूप में उपयोजित इतिहास का वर्णन किया जा सकता है ।

## ३.४ सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का प्रबंधन

**(अ) सांस्कृतिक विरासत :** यह मानवनिर्मित होती है । वह मूर्त और अमूर्त स्वरूप में होती है ।

**१. मूर्त सांस्कृतिक विरासत :** इस वर्ग में प्राचीन स्थान, वास्तु, वस्तुएँ, हस्तलिखित (पांडुलिपियाँ) शिल्प, चित्र आदि का समावेश होता है ।

**२. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत :** इस वर्ग में निम्न मुद्दों का समावेश होता है ।

* मौखिक परंपराएँ और उनके लिए उपयोग में लाई जाने वाली भाषा ।
* पारंपरिक ज्ञान ।
* तीज-त्योहार, पर्व मनाने की सामाजिक प्रथाएँ और धार्मिक विधियाँ ।
* कला प्रस्तुतीकरण की पद्‌धतियाँ ।
* विशिष्ट पारंपरिक कौशल ।
* इन परंपराओं, प्रथाओं, कौशलों आदि का प्रतिनिधित्व करने वाले समूह, वर्ग ।

**(ब) प्राकृतिक विरासत :** प्राकृतिक विरासत की अवधारणा में प्रकृति में पाई जाने वाली जैवविविधता का विचार किया गया है । इसमें निम्न घटकों का समावेश होता है;

(१) प्राणी (२) वनस्पति जगत (३) उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक परिसंस्थाएँ और भूरचनात्मक विशेषताएँ ।

आनेवाली पीढ़ियों के हितों का संरक्षण करने के लिए हमारी विरासत का संरक्षण होना आवश्यक है । विलुप्त होने की कगार पर पहुँची सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का संरक्षण और संवर्धन होने की दृष्टि से विश्व संगठन यूनेस्को ने कुछ दिशानिदेशक सिद्‌धांत घोषित किए हैं । उन दिशानिदेशक सिद्‌धांतों के आधार पर विश्व विरासत के पद हेतु पात्र सिद्‌ध होने वाले स्थानों, परंपराओं की सूची घोषित की जाती है ।

### एक ही दृष्टिक्षेप में :

**भारत की विश्व मौखिक और अमूर्त विरासत सूची में समाविष्ट परंपराएँ :**

२००१ : केरल की 'कुटियट्टम' संस्कृत नाट्य परंपरा ।
२००३ : वैदिक पठन परंपरा ।
२००५ : उत्तर भारत में मंचन की जानेवाली 'रामलीला' की प्रस्तुति ।
२००९ : गढ़वाल (उत्तराखंड) में प्रचलित 'रम्मन' धार्मिक पर्व आणि विधिनाट्य ।
२०१० : राजस्थान का कालबेलिया लोकसंगीत और लोकनृत्य ।
२०१० : पश्चिम बंगाल, झारखंड और ओडिशा का छाऊ नृत्य ।
२०१० : केरल में प्रचलित 'मुडियेट्टू' विधि नाट्य आणि नृत्य नाट्य ।
२०१२ : लदाख, जम्मू और कश्मीर में प्रचलित बौद्ध मंत्र पठन की परंपरा ।
२०१३ : मणिपुर में प्रचलित 'संकीर्तन' परंपरा ।
२०१४ : पंजाब के ठठेरा समाज की तांबे और पीतल के बरतन बनाने की कला परंपरा ।
२०१६ : नवरोज
२०१६ : योग

**भारत के विश्व विरासत के स्थान : सांस्कृतिक**

१९८३ : आगरा का किला
१९८३ : अजिंठा (अजंता) की गुफाएँ
१९८३ : वेरुल (एलोरा) की गुफाएँ
१९८३ : ताजमहल
१९८४ : महाबलीपुरम के मंदिर
१९८४ : कोणार्क का सूर्यमंदिर
१९८६ : गोआ के चर्च और कॉन्वेंट
१९८६ : फतेहपुर सीकरी
१९८६ : हंपी का वास्तुसंकुल
१९८६ : खजुराहो के मंदिर
१९८७ : घारापुरी (एलीफंटा) की गुफाएँ
१९८७, २००४ : चोलों के मंदिर-तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर, गंगैकोंडचोलीश्वरम का बृहदेश्वर मंदिर और दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर ।
१९८७ : पट्टदकल के मंदिर
१९८९ : सांची का स्तूप
१९९३ : हुमायूँ की कब्र
१९९३ : कुतुबमीनार और परिसर की वास्तुएँ
१९९९ : (१) दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे
(२) नीलगिरि माउंटेन रेलवे
(३) द काल्का-शिमला रेलवे
२००२ : बोधगया का महाबोधी मंदिर और परिसर
२००३ : भीमबेटका का शैलाश्रय
२००४ : चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्वीय स्थान
२००४ : छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई
२००७ : लाल किला, दिल्ली
२०१० : जंतर-मंतर, जयपुर
२०१३ : राजस्थान के पर्वतीय गढ़
२०१४ : गुजरात के पाटण में 'रानी-की-बाव'
२०१६ : नालंदा महाविहार पुरातत्वीय स्थान
२०१६ : चंडीगढ़ का कैपिटल काम्प्लेक्स
२०१७ : अहमदाबाद-ऐतिहासिक नगर

**भारत के विश्व विरासत के स्थान : प्राकृतिक**

१९८५ : काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
१९८५ : केवलदेव राष्ट्रीय उद्यान
१९८५ : मानस वन्यजीव अभयारण्य
१९८७ : सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान
१९८८ : नंदादेवी और वैली ऑफ फ्लॉवर्स २००५ राष्ट्रीय उद्यान
२०१२ : पश्चिम घाट
२०१४ : ग्रेट हिमालयन पार्क

**भारत में मिश्र स्वरूप के विश्व विरासत स्थान**

२०१६ : कांचनगंगा राष्ट्रीय उद्यान

कैलास मंदिर, वेरुल (एलोरा)

यूनेस्को की विश्व प्राकृतिक विरासत सूची में पश्चिम घाट का समावेश २०१२ ई. में किया गया।

सातारा जिले में कास पठार पश्चिम घाटश्रेणियों में ही बसा हुआ है । सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का प्रबंधन करना; यह उपयोजित इतिहास का एक प्रमुख अंग है । इस विरासत का संरक्षण और संवर्धन करने का अधिकांश कार्य भारत सरकार का पुरातत्व विभाग और भारत के प्रत्येक राज्य सरकार का पुरातत्व विभाग करता है । इनटैक (इंडियन नैशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरीटेज) यह एक स्वयंसेवी संस्था है और इस क्षेत्र में यह संस्था १९८४ से कार्यरत है । सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थानों का संरक्षण और संवर्धन की परियोजनाओं में अनेक विषयों के तज्ञ व्यक्तियों का समावेश रहता है। इन सभी में संबंधित स्थानों के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक इतिहास का बोध निर्माण करने का कार्य उपयोजित इतिहास द्वारा किया जा सकता है। परिणामस्वरूप;

(१) परियोजना के अंतर्गत विरासत स्थानों के मूल स्वरूप को न बदलते हुए संरक्षण और संवर्धन का कार्य करना संभव होता है ।

(२) स्थानीय समाज का ताना-बाना और मानसिकता, उनके सम्मुख वर्तमानकालीन विविध चुनौतियों, स्थानीय लोगों की अपेक्षाओं की समीक्षा की जा सकती है ।

(३) सांस्कृतिक विरासत स्थानों का संरक्षण एवं संवर्धन करते समय स्थानीय लोगों की भावनाएँ आहत न हों; इसके लिए की जानेवाली उपाय योजनाओं का नियोजन किया जा सकता है ।

(४) स्थानीय लोगों को उस परियोजना में सहभागी कराया जा सकता है ।

(५) स्थानीय लोगों के पारंपरिक कौशलों को प्रोत्साहन दे सकेंगे; ऐसे उद्योग-व्यवसायों को बढ़ावा मिलेगा; इसके लिए सुनियोजित ढंग से योजना बनाना संभव होता है ।

## ३.५ संबंधित व्यावसायिक क्षेत्र

नीचे उल्लिखित क्षेत्रों से संबंधित कानूनी नियम और सार्वजनिक नीतियाँ निश्चित करने हेतु इतिहास का ज्ञान सहयोगी सिद्ध होता है ।

१. संग्रहालय और अभिलेखागार
२. ऐतिहासिक स्थानों का संरक्षण और संवर्धन
३. पर्यटन और आतिथ्य
४. मनोरंजन और संपर्क माध्यम

### क्या, आप जानते हैं ?

पुरातन वस्तुओं का वर्णन करने वाली मिट्टी की टिकियाँ

विश्व में सबसे प्राचीन माना जाने वाला (ईसा पूर्व ६ठी शताब्दी) संग्रहालय मेसोपोटेमिया में 'उर' इस प्राचीन नगर का उत्खनन करते समय पाया गया । यह उत्खनन अंग्रेज पुरातत्वज्ञ सर लियोनार्ड वुली ने १९२२ ई. से १९३४ ई. की कालावधि में किया । यह संग्रहालय एनिगोल्डी नामक मेसोपोटेमिया की राजकन्या ने बाँधा था । वह स्वयं उस संग्रहालय की संग्रहपाल के रूप में कार्य करती थी ।

इस संग्रहालय में बरामद प्राचीन वस्तुओं के साथ उन वस्तुओं का विस्तार में वर्णन करने वाली मिट्टी की टिकियाँ (clay tablets) थीं ।

### क्या, आप जानते हैं ?

इंडियन म्यूजियम - कोलकाता

कोलकाता में स्थित 'इंडियन म्यूजियम' की स्थापना एशियाटिक सोसाईटी द्‌वारा १८१४ ई. में हुई । डैनिश वनस्पति वैज्ञानिक नैथानिएल वॉलिक इस संग्रहालय के संस्थापक और प्रथम संग्रहपाल थे । यहाँ दिया गया संग्रहालय का छायाचित्र १९०५ ई. का है । संग्रहालय के तीन प्रमुख विभाग-कला, पुरातत्व और मानव विज्ञान हैं तथा उनसे जुड़े संरक्षण, प्रकाशन, छायाचित्रण (फोटोग्राफी), प्रदर्शनी - प्रस्तुतीकरण, प्रतिकृति निर्मिति, प्रशिक्षण, ग्रंथालय, सुरक्षा जैसे विभाग हैं ।

इनमें से प्रत्येक क्षेत्र के प्रबंधन के लिए विशेष कौशल प्राप्त मानवशक्ति की आवश्यकता होती है । जैसे - स्थापत्यविशारद, अभियंता, इतिहासकार, पुरातत्वज्ञ, संग्रहपाल, समाज वैज्ञानिक, अभिलेखागार प्रबंधक, विधितज्ञ, छायाचित्रण तज्ञ आदि । यह सूची यहीं समाप्त नहीं होती । प्राचीन स्थानों, वास्तुओं और वस्तुओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सभी तज्ञों को पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक होता है। उपयोजित इतिहास क्षेत्र की परियोजनाओं के फलस्वरूप उपर्युक्त उल्लिखित क्षेत्रों में व्यवसाय के अनेक अवसर उपलब्ध हो सकते हैं ।

### मालूम कर लें -

अभिलेखागारों में महत्वपूर्ण पुराने कागजातों, दस्तावेजों, पुरानी फिल्में आदि संरक्षित कर रखी जाती हैं ।

भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली में है । भारत में सभी राज्यों के स्वतंत्र अभिलेखागार हैं ।

### वैशिष्ट्यपूर्ण अभिलेखागार

पुणे में 'नैशनल फिल्म अर्काइव' (राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय संस्थान) का मुख्य कार्यालय है । भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण विभाग के माध्यम विभाग के रूप में १९६४ ई.में इसकी स्थापना हुई । इसके तीन प्रमुख उद्‌देश्य थे ।

- भविष्यकालीन पीढ़ियों के लिए दुर्लभ भारतीय फिल्मों को खोजना, उन्हें प्राप्त करना और फिल्मों की इस विरासत का संरक्षण करना ।
- फिल्मों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों/घटकों का वर्गीकरण करना, उनका स्थायी रूप में लेखन-अंकन कर रखना और अनुसंधान/शोधकार्य करना ।
- फिल्म संस्कृति का प्रसार केंद्र स्थापित करना ।

इस पाठ में हमने देखा कि लोगों में इतिहास के बारे में जागरण किस प्रकार किया जा सकता है, हमारी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का संरक्षण और संवर्धन के विषय में समाज में किस प्रकार जागृति निर्माण की जा सकती है, इसके लिए इतिहास के ज्ञान का उपयोग कैसे किया/करवाया जा सकता है, उसके आनुषंगिक रूप से व्यावसायिक कौशलों और उद्‌योग-व्यवसायों के क्षेत्र में किस प्रकार वृद्‌धि की जा सकती है आदि बातों का विचार और नियोजन करने का कार्य उपयोजित इतिहास में किया जाता

है । ऐतिहासिक और सार्वजनिक स्थानों का विद्रूपीकरण न हो, आगामी पीढ़ियों के हितों के लिए उनका उचित पद्धति से संरक्षण-संवर्धन हो; इसके लिए यह आवश्यक है ।

## स्वाध्याय

**१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।**

(१) संसार का सब से प्राचीन संग्रहालय ........... नगर का उत्खनन करते समय पाया गया ।
(अ) दिल्ली (ब) हड़प्पा
(क) उर (ड) कोलकाता

(२) भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार ........ में है ।
(अ) नई दिल्ली (ब) कोलकाता
(क) मुंबई (ड) चेन्नई

**(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।**

(१) कुटियट्टम - केरल की संस्कृत नाट्यपरंपरा
(२) रम्मन - पश्चिम बंगाल का नृत्य
(३) रामलीला - उत्तर भारत की प्रस्तुति
(४) कालबेलिया - राजस्थान का लोकसंगीत और लोकनृत्य

**२. निम्न अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए ।**

(१) उपयोजित इतिहास (२) अभिलेखागार

**३. निम्न संकल्पनाचित्र पूर्ण कीजिए ।**

सांस्कृतिक विरासत
मूर्त
अमूर्त

.................................. ..................................
.................................. ..................................
.................................. ..................................

**४. निम्न कथनों को कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।**

(१) तकनीकी विज्ञान के इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक है।
(२) विश्व विरासत के पद के लिए पात्र सिद्ध होने वाले स्थानों, परंपराओं की सूची यूनेस्को द्वारा घोषित की जाती है ।

**५. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए ।**

(१) निम्न विषयों के अनुसंधान में इतिहास की अनुसंधान पद्धति किस प्रकार उपयुक्त सिद्ध होगी, वह स्पष्ट कीजिए ।
(अ) विज्ञान (ब) कला (क) प्रबंधन विज्ञान
(२) उपयोजित इतिहास का वर्तमानकाल के साथ किस प्रकार सहसंबंध होता है ?
(३) इतिहास के साधनों का संरक्षण होना चाहिए; इसके लिए न्यूनतम १० उपाय सुझाइए ।
(४) प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करने की परियोजना द्वारा कौन-सी बातें सिद्ध होती हैं?

**उपक्रम**

भारत के मानचित्र के ढाँचे में विरासत स्थानों को दर्शाइए ।

36A494